© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

वैदिक दर्शनों में आणविक सिद्धान्त

पूनम देवी (जे0आर0एफ0)
संस्कृत विभाग
नेहरू ग्राम भारती मानित् विश्वविद्यालय
जमुनीपुर, कोटवा, दुबावल
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

शोध आलेख सार– न्याय, वैशेषिक मीमांसा तथा जैन दर्शन जगत जैसा है वैसा ही स्वीकार करते हैं। वे हमारी चेतन अनुभूति से स्वतंत्र ब्राह्म जगत के अस्तित्व में विश्वास करते है। सूक्ष्मतर पर परमाणु घटना के बड़े स्तर पर दिखाई देने वाली धटनाओं को जन्म देने की प्रक्रिया उनके अनेकत्ववाद का मूल आधार है।

मुख्य शब्द– दर्शन, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, जैन, अनेकत्ववाद।

- दर्शनशास्त्र वह ज्ञान है जो परम् सत्य और प्रकृति के सिद्धान्तों और उनके कारणों की विवेचना करता है दर्शन यथार्थ की परख के लिए एक दृष्टिकोण है। दार्शनिक चिन्तन मूलतः जीवन को अर्थक्ता की खोज का पर्याय है। वस्तुतः दर्शनशास्त्र स्वत्व अर्थात् प्रकृति तथा समाज और मानव चिन्तन तथा संज्ञान की प्रक्रिया के सामान्य नियमों का विज्ञान है। दर्शनशास्त्र सामाजिक चेतना के रूपों में से एक है।

दर्शन उस विद्या का नाम है जो सत्य एवं ज्ञान की खोज करता है।

- भारत में 'दर्शन' उस विद्या को कहा जाता है जिसके द्वारा तत्व का साक्षात्कार हो सके। 'तत्व दर्शन' या 'दर्शन' का अर्थ है तत्व का साक्षात्कार। मानव के दुःखों की निवृत्ति के लिए या तत्व साक्षात्कार कराने के लिए ही भारत में दर्शन का जन्म हुआ है। हृदय की गाँठ तभी खुलती है और शोक तथा संशय तभी दूर होते हैं जब एक सत्य का दर्शन होता है।

IJSRST1845585 | Received : 02 April 2018 | Accepted : 25 April 2018| March-April-2018 [(4)7 | 684-692]

- वेद शब्द ज्ञान का पर्याय है जो इसके मूल धातु विद् से प्रकट होता है। विज्ञान शब्द क्रमबद्ध ज्ञान का वाचक है अतः वेद एवं विज्ञान का सम्बन्ध अत्यन्त स्वाभाविक है वैदिक ग्रन्थों में निहित ज्ञान वेदों के भाष्यकर्ताओं के अनुसार स्वयं प्रकट है।

वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन से हमें विज्ञान के हर क्षेत्र जैसे, पदार्थ विज्ञान, गणित, गति विज्ञान, चिकित्साशास्त्र इत्यादि क्षेत्रों में तत्कालीन समाज की ज्ञात विषयों पर जानकारी मिलती है। परमाणु विज्ञान के विषय में वेदों में जो कुछ मूल रूप से कहा गया उसी को बाद में दर्शन में विभिन्न दृष्टिकोणों से विस्तृत किया गया है।

भारतीय दर्शन एक वैज्ञानिक तार्किक, आध्यात्मिक और सार्वभौमिक मानवता पर आधारित विचारधारा का नाम हैं यह विश्वास को नही तर्क को प्रमाण माना जाता है प्राचीन भारत में भौतिक संसार को समझने के बहुत प्रयास किये गये। हालांकि आधुनिक विज्ञान से अलग भारतीय विचार धारा ने आत्मा को समझने और उसे अनुभव करने पर ज्यादा जोर दिया। उन्होंने आत्मज्ञान के लिए भौतिक पदार्थ की जानकारी को भी आवश्यक माना।

यहाँ छः दर्शन बहुत प्रसिद्ध है :– सांख्य, न्याय, वैशेषिक, लोकयत, मीमांसा व वेदान्त। इनमें मीमांसा व वेदान्त को छोडकर शेष चारों भौतिकवादी एवं ईश्वर निरपेक्ष है। ईश्वरवाद एवं अनीश्वरवाद दोनों समान रूप से यहां आदरणीय है। दोनों ही विचारधाराएँ सत्य की खोज में है किन्तु सत्य को खोजने का अपना–अपना तरीका है पदार्थो को समझने के उन्होंने अपने तरीके तथा अपने सिद्धान्त बनाये।

(1) वैशेषिक दर्शन :–

भारत ही वह देश है जिसने सर्वप्रथम आणविक सिद्धान्त को जन्म दिया। इसके जनक कणाद ऋषि थे। वे खेत से अन्य कणों को चुनकर अपने जीवन का निर्वाह किया करते थे इसलिए उनका नाम कणाद पडा इस दर्शन में 'विशेष' नामक पदार्थ की विवेचना की गयी, इस कारण इस दर्शन को वैशेषिक दर्शन कहा जाने लगा।

इनके अनुसार चेतन जगत का विकास सूक्ष्म अणुओं पर निर्भर करता है जो आकाश में विद्यमान है। ये अणु संङ्ख्या में अनन्त तथा सनातन है। इसकी मुख्य विशेषताएं इस प्रकार है।

पदार्थ जो साधारण तथा हमें चारों ओर देखता है उसकी अवस्था परिवर्तनशील है। वैशेषिक सिद्धान्त के अनुसार नौ मूल तत्व है :–

(1) क्षिति (2) अप

(3) तेजस् (4) समीर

(5) आकाश (6) दिक्

(7) काल (8) मानस्

(9) आत्मन्

पहले पाँच मूलतत्व भौतिक है तथा चार अभौतिक आकाश, दिक् तथा काल सतत विकास की प्रारम्भिक स्थिति को दर्शाते है। ये नित्य तथा सर्वव्याप्त है। मानस आत्मन् के सहयोग से पदार्थ में सुख–दुःख का अनुभव करता है।

(2) पदार्थ सूक्ष्मकणों से मिलकर बना है। परमाणु पदार्थ का मूलभूत घटक है यह सूक्ष्मतम तथा गोलाकार कण है। प्रत्येक परमाणु की दूसरे से भिन्न विशेषताएँ है अर्थात प्रत्येक परमाणु विशिष्ट है इस अवधारणा एवं कल्पना के कारण इस दर्शन का नाम वैशेषिक दर्शन पड़ा।

(3) प्रत्येक तत्व के अपने विशेष परमाणु होते है जैसे क्षिति के परमाणु की विशेषता है गन्ध अप् के परमाणु का गुण स्वाद, वायु परमाणु का स्पर्श एवं तेजस् के परमाणु का रूप, आकाश की अपनी कोई परमाणु संरचना नही है। यह परमाणुओं के मध्य खाली स्थान को भरता है।

(4) भौतिक संसार की रचना पाँचो भूत (मूल तत्व–क्षिति, अप, तेजस, वायु तथा आकाश) से हुई है। पाँच मूल तत्वों का सिद्धान्त हमारे पाँच ज्ञान इन्द्रियों की संवेदना पर आधारित है यह समझ लेना आवश्यक होगा कि यहाँ वर्णित पाँच भूत साधारण अर्थ में पृथ्वी, जल तथा वायु के लिए प्रयोग नही हुए बल्कि जीवन के मूलभूत आधार के अर्थ में इनका प्रयोग हुआ है। इनकी तुलना रसायन विज्ञान

के तत्वों से नही की जा सकती है क्योकि रसायन विज्ञान के तत्व पृथ्वी के अंग है। यहाँ तत्व का विशेष अर्थ है।

(5) अन्त्य होकर जो नित्य द्रव्य में रहता है उसे विशेष कहते है। वैशेषिक में विशेष उतना ही वास्तविक है जितना आत्मा। दिक्, काल, आत्मा, मन, पृथिवी, वायु, जल अग्नि के परमाणुओं की विशिष्टता की व्याख्या के लिए विशेष को अपनाया जाता है।

(6) परमाणु नित्य गति में होते है। गति के कारण दो परमाणु मिलकर अणु बनाते है तथा ये अदृश्य होते है तीन परमाणु बनाते है जिसे देखा जा सकता है। इसी प्रकार तीन से अधिक परमाणु मिलकर पदार्थ की रचना करते हैं।

(8) वैशेषिक पदार्थ को नित्य तथा अविनाशी मानते है। उनके अनुसार कुछ पैदा नही किया जा सकता न कुछ नष्ट किया जा सकता है, सिर्फ रूपान्तरण होता है तथा कारण तथा कार्य दोनों में वही परमाणु है।

(2) न्याय दर्शन :–

इसकी मान्यता है कि सत्य की अनुभूति सही ज्ञान से ही सम्भव है। यह वैशेषिक दर्शन में दिए गए पदार्थ सम्बन्धी विचारों को स्वीकार करता है वस्तु की स्थिति के सम्बन्ध में न्याय विचारकों ने तीन परस्पर लम्बवत् अक्ष का विचार प्रस्तुत कियां इस तरह किसी बिन्दु की स्थिति दूसरे बिन्दु के सापेक्ष इन तीनों दूरियों द्वारा व्यक्त की जा सकती है। इस तरह न्याय विचारकों ने ठोस ज्यामिति की नींव रखी।

(3) मीमांसा दर्शन :–

यह भी वैशेषिक दर्शन के परमाणु को मानता है किन्तु रसायन क्रिया के बारे में इनका भिन्न मत है मीमांसा दर्शन के अनुसार प्राकृतिक घटनाएं शक्ति के कारण होती है। शक्ति को न पैदा किया जा सकता न ही नष्ट किया जा सकता है। मीमांसा के अनुसार प्रकाश उच्च गति के कणों की तरह है।

(4) जैन दर्शन :–

इसके अनुसार पदार्थ (पुदगल) नित्य है। पुदगल शब्द पुद तथ गल से मिलकर बना है। पुद का अर्थ है संयोग, पास आना तथा गल का अर्थ है अलग। पुदगल का अर्थ है जो निरन्तर परिवर्तनशील है। जैन दर्शन परमाणुवाद के विचार को मानता है किन्तु उनका परमाणु वैशेषिक परमाणु से भिन्न है जैन दर्शन के अनुसार सभी परमाणु राक जैसे है उनमें कोई मात्रात्मक या गुणात्मक भेद नही है प्रत्येक परमाणु रसायनिक क्रिया में भाग लेते है। जैन दर्शन में काल सर्वव्यापक नही है। उन्होंने समय को छोटे–छोटे काल खण्डों में विभाजित किया। इस तरह उन्होंने ईकाई की अवधारणा को जन्म दिया जिसे कालानुस कहते हैं। कालानुस अविभाज्य तथा अदृश्य है।

(5) हीनयान बौद्ध दर्शन :–

बौद्ध दर्शन दो हिस्सों में बटॉ है हीनयान तथा महायान। हीनयान दर्शन ने क्षणिकवाद को जन्म दिया। संसार की सभी वस्तुएं क्षण में बदल रही है। इस बात के अनुसार यह संसार गतिशील परमाणुओं से बना है। परमाणु पदार्थ की तरह नही किन्तु यह गतिशील बल या ऊर्जा की तरह है। इसके अनुसार आठ प्रकार के परमाणु होते हैं। चार मूल परमाणु जैसे पृथ्वी, जल, अग्नि तथ वायु चार साधारण जैसे गन्ध, स्वाद, रूप तथा स्पर्श न्याय तथा वैशेषिक विचारधारा के विपरीत परमाणु क्षणिक है। क्योंकि परमाणु रूपान्तरित होते रहते हैं। संसार में प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व अस्थायी तथा क्षणिक है। जो स्थायी दिखाई देता है संकल्प, विकल्प में सापेक्ष भ्रम की वजह से है उनके अनुसार दिक् का अस्तित्व सिर्फ परिवर्तन के लिए है।

महायान :–

यह परमाणुवाद तथा अविभाज्य परमाणुवाद की विचारधारा को स्वीकार नही करता। उनका तर्क है यदि आकाश सर्वव्यापक है तो यह परमाणु के आरपार तथा उसके बाहर भीतर होना चाहिए अन्यथा उसकी सर्वव्यापकता सिद्ध नही होती है। वह परमाणुवाद की जगह शून्यवाद को मानते है उनके अनुसार पदार्थ तथा आत्मा गति तथा अगति पूर्ण तथा अपूर्ण के संयोग का आधार शून्य है।

(6) चार्वाक दर्शन :–

इस पर कोई अधिकारिक साहित्य उपलब्ध नही है। यह पहले चार तत्वों क्षिति, अप, तेजस तथा वायु को सबका आधार मानता है। वह स्वतः ही क्रियाशील है। वह प्राण तथा आत्मा जैसी कोई चीज उनके अनुसार प्रत्यक्ष ही प्रमाण है। अतः सृष्टि के विकास का उनका कोई सिद्धान्त नही है।

(7) सांख्य दर्शन :–

इस दर्शन के निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।

क– यह पुरूष तथा प्रकृति दोनों को स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार करता है। पुरूष स्वयं निष्क्रिय है तथा प्रकृति के विकास में उसका कोई सहयेग नही है प्रकृति सृष्टि की मूल जड है तथा प्रकृति सर्वव्यापक अनन्त तथा अरूप है प्रकृति की गति नित्य है प्रकृति सत्व रजस् तमस् तीनों गुणों की साम्यावस्था से बनी है प्रकृति स्वयं गुणहीन है।

ख– सत्व जैसे प्रकाश तथा प्रकाशमान रजस् जैसे उत्प्रेरक तथा गतिमान तमस् जैसे जडत्व तथा आलस्य पूर्ण । ये गुण एक दूसरें से घनिष्ठ रूप से सम्बंधित है पुरूष की दृष्टि से प्रकृति की साम्यवस्था खत्म हो जाती है तथा एक गुण की दूसरे गुण की अधिकता के कारण प्रकृति प्रकट होने लगती है। इस प्रक्रिया में संयोग वियोग तथा पुनः संयोग प्रारम्भ हो जाता है।

ग– प्रकृति में सत्व की अधिकता से महत् प्रकट होता है जिससे सृष्टि की रचना की प्रक्रिया की रचना प्रारम्भ होती हे फिर रजस् की प्रधानता से महत से अहंकार प्रकट होता है, अहंकार से पांच तन्मात्राएं व्यक्त होती है जो पांच ज्ञान इन्द्रियों से सम्बंधित है। तन्मात्रा में मान तथा पदार्थ दोनों की विशेषताएं होती है। तन्मात्राएं आदृश्य रूप से अस्तित्व बोध में समाहित रहती है। सीमित ज्ञान के कारण मनुष्य इन्हें जान नही पाता।

घ– वैशेषिक दर्शन के अविभाज्य परमाणु को सांख्य दर्शन में पांच तन्मात्रा का संयोग बताया है। जैसे शब्द तन्मात्रा आकाश से प्रकट होती है। वायु शब्द तथा स्पर्श से प्रकट होती है अप (जल) शब्द स्पर्श रूप तथा रस से प्रकट होते है प्रकृति तथा परमाणु का सम्बंध तन्मात्राओं के द्वारा होता

है। एक बार परमाणु बनने के बाद परमाणु से पदार्थ बनने की प्रक्रिया वैसे ही है जैसे वैशेषिक दर्शन है।

ड़– न्याय और वैशेषिक दर्शन में वर्णित नित्य, अनन्त, सर्वव्याप्त आकाश दिक् तथा काल को सांख्य में विभाजनीय तत्व आंकाश कहा गया है। सांख्य के अनुसार समय की सबसे छोटी ईकाई क्षण है। एक क्षण वह समय है जो परमाणु (तन्मात्रा) को स्वयं के आकार पार करने मे लगता है।

(8) योग दर्शन :–

यह शरीर और मन पर नियंत्रण आचरण की शुद्धता और ध्यान को जीवन मे ंदार्शनिक सत्य को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक मानता है। भौतिक पक्ष में यह सांख्य के मत से सहमत है। योग दर्शन द्रव्यमान की अवधारणा को परिभाषित करता है द्रव्यमान में ऊर्जा होती है जिसके कारण गति सम्भव है। योग ने काल तथा दिक् को मन की एक अवस्था माना है जो बाह्य जगत में भाषित होती है।

(9) तन्त्र दर्शन :–

स्थूल रूप से सांख्य दर्शन तथा तन्त्र दर्शन एक दूसरे से मिलते हैं तन्त्र दर्शन में प्रकृति तथा पुरूष की जगह शक्ति तथा शिव की मान्यता है। द्रव्यमान को काल्पनिक ऊर्जा की तरह माना है। काल को शक्ति माना है जो ब्रह्माण्ड की रचना करती है, पालती तथा विनाश करती है।

(10) वेदान्त दर्शन :–

यह अद्वैत का समर्थक है। सांख्य के द्वैतवाद का वेदान्त के अद्वैत ब्रह्म में एकाकार हो जाता है जो शाश्वत सत्य है। इस प्रकार पदार्थ की विभिन्न अवस्थाओं से होते हुए हम शाश्वत सत्य में विलीन हो जाते है।

विश्व के प्राचीनतम् ग्रन्थ ऋग्वेद में वैदिक ऋषियों ने यह अनुभव किया था कि प्रकृति को विभिन्नता जैसी दिखाई देती है वैसे ही नही। ऋग्वेद के अनुसार एक ही तत्व की सत्ता है। बाद में उपनिषदों ने भी अद्वैतवाद को ही मान्यता दी।

वैदिक ऋषियों का सुनिश्चित मत था कि इस विश्व में एक शाश्वत नियम है जो सभी वस्तुओं तथा तथ्यों को आबद्ध करता है विश्व की कोई वस्तु या क्रिया इससे अछूती नही है (अथर्ववेद 10.8. 31) ब्रहमण्ड की पूंजीभूत ऊर्जा से ही सभी तत्व अस्तित्व में आये (अथर्ववेद 10.8.40) ऊर्जा से ही युक्त i¥p तत्वों को वेदों में महाभूत कहा गया है एवं वैदिक शाखाओं में उन्हें तन्भात्राओं के नाम से वर्णित किया गया है। यह प¥च महाभूतों का योग क्रिया व प्रतिक्रिया द्वारा अनेकानेक रूप ग्रहण करता है।

इस प्रकार ऊर्जा एवं पदार्थ एक–दूसरे से अविच्छेद्य है। इसकी पुष्टि आधुनिक वैज्ञानिक आइन्सटाइन के प्रसिद्ध सूत्र $E = MC^2$ द्वारा होती है जो यह प्रदर्शित करता है कि ऊर्जा तथा पदार्थ को एक दूसरे में बदला जा सकता है अर्थात् पदार्थ एवं ऊर्जा अविभेद्य है।

निष्कर्ष :–

न्याय, वैशेषिक मीमांसा तथा जैन दर्शन जगत जैसा है वैसा ही स्वीकार करते हैं। वे हमारी चेतन अनुभूति से स्वतंत्र ब्राह्म जगत के अस्तित्व में विश्वास करते है। सूक्ष्मतर पर परमाणु घटना के बड़े स्तर पर दिखाई देने वाली धटनाओं को जन्म देने की प्रक्रिया उनके अनेकत्ववाद का मूल आधार है।

आर्य समाज के संस्थापक 'महर्षि दयानन्द' त्रैतवाद के प्रवर्तक थे। वे ईश्वर जीवन तथा प्रकृति तीनों को अनादि मानते है। वेदान्त तथा कश्मीरी शैव दर्शन अद्वैतवाद का जन्मदाता है। पदार्थ का वेदान्त के ब्रह्म तथा शैव दर्शन के परमशिव में विलय हो जाता है। बौद्वों के महायान दर्शन में भी वेदान्त के ब्रह्म की जगत शून्य की मान्यता है। चार्वाक दर्शन चेतना (स्वयं) को भी उत्पत्ति पदार्थ से मानता है। धीरे–धीरे इस विचार में भी सुधार हुए। ये इन्द्रिय, प्राण, मन को भी मान्यता देने लगे। आधुनिक विज्ञान इसी कोटि में आता है। भारतीय दर्शन में भौतिक विचारों को अधिक महत्व नही दिया गया। उसे मूल कारण नही माना गया। ये जीवन को आध्यात्मिक अर्थ देते हुए मोक्ष का उपाय भी सुझाती है।

ननावीर्या ओषधीर्या बिभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतांम् नः ।।2।।

(या) जो पृथ्वी (नानावीर्या) अनेक प्रकार के गुणों वाली (औषधीः) ओषधी और वनस्पतियों को (बिभर्ति) धारण करती है वह पृथिवी (नः) हमारे लिये (प्रथताम्) सुखों से विस्तृत हो और युक्त हो और (नः राध्याम्) हमारी सब कामनाओं की सिद्धि करें।

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं वृष्टयः सं बभूवुः।

यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु।।3।।

अर्थ :–

(यस्यां समुद्रः) जिसमें समुद्र है (उत सिन्धुः) और बहुत बडी–बडी झीले हैं (आपः) इसमें बडी–बडी नदियां है (यस्याम्) जिसमें (अन्नम) अन्न और (कृष्टयः) अन्य नानाविध भोग्य पदार्थ (सम्बभूवुः) पैदा होते है (यस्याम्) जिस भूमि पर रहता हुआ (प्राणत्) श्वास लेता हुआ और (एजत्) गतिमान प्राणी वर्ग (जिन्वति) उत्कृष्टता को प्राप्त होता है (सा भूमिः) वह भूमि (नः) हम सबको (पूर्व पेये) पूर्वजो के द्वारा परिपुष्ट करने में (दधातु) युक्त करें।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. वैदिक यज्ञ संस्था वेद विज्ञान – प्रो0 ओम प्रकाश पाण्डेय

2. तर्क संग्रह – अनीता सेन गुप्ता

3. सांख्यकारिका – डा0 रामकृष्ण आचार्य

4. वेदान्तसार – डा0 कृष्णकान्त त्रिपाठी

5. तर्क भाषा – डा0 श्री निवास शास्त्री

6. https://hi.m.wikipedia.org

*****